ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-21 फरवरी-I, 2016 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

धरती पर सम्पूर्णता की जनक बन उभरी-दादी

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है। पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक देशों को अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है। अपने मन मस्तिष्क को आध्यात्मिक प्रयोगशाला बना,उसका प्रयोग इस जगत के मानवों को जीवन की सही राह दिखाने वाली एक दूरांदेशी, लाइट हाउस दादी जानकी को उनके इस धरा पर इस अमूल्य देह के सौ वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में कोटि-कोटि बधाइयाँ।

दादी जानकी एक सम्पूर्ण अभ्यासी महिला हैं जिनका जीवन उनके कर्म से बोलता है, जिन्होंने 20वीं शताब्दी में एक महान परिवर्तन की नींव रखी। आप शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य की एक मिसाल हैं। आपका हर कार्य प्रायः समझ पर आधारित होता है। यदि हम इसे कहें कि आपकी सोच एक सुरक्षित स्वास्थ्यकारी मानवता का भविष्य निर्धारित करती है तो कोई अति-श्योक्ति नहीं होगी। आप 1916 में एक सिंधी, धनाढ्य व जनकल्याणकारी परिवार जो वर्तमान समय पाकिस्तान (सिंध) का हिस्सा है में पैदा हुईं, जो आज हज़ारों हज़ार के विवेक को जागृत करने की प्रेरणाश्रोत बनीं। आपको देखकर आज सभी अपना जीवन खुशी से भरपूर और स्वास्थ्यकर बनाने की प्रेरणा लेते हैं। आपके बारे में एक बात और हम कहना चाहेंगे कि आप ही हैं जिन्होंने वैश्विक स्तर पर भावना और उससे उभरने वाली बीमारियों की गहराई में जाकर सबको अवगत कराया। आज बीमारी सिर्फ शारीरिक ही नहीं है, बल्कि उसका एक स्तर मानसिक भी है। इनका दृष्टिकोण ना सिर्फ स्वास्थ्य को गति देना है बल्कि व्यैक्तिक स्तर पर पूरे विश्व की आत्माओं को हीलिंग देना है।

सेवा की विहंगम दृष्टि

दादी की जीवनी की झलक अगर हम देखें तो उन दिनों दादी को जो पहली सेवा मिली जो बीमारों की सेवा थी, जो उनके जीवन को तीव्रता प्रदान करने वाला क्षण था। उनकी प्राथमिक शिक्षाओं में प्रमुख रूप से भारतीय ग्रन्थ थे जिसको उन्होंने बड़े दिल से समझा और आत्मसात किया। 12 साल की उम्र से आपने इस श्रृंखला को पूरी तरह से विकसित किया कि कैसे अपने आपको आध्यात्मिक चेतना के आधार से जीवित रखना है। आंतरिक खुशी से कैसे शारीरिक दर्द से बाहर आया जाता है, इसे आपसे अच्छी तरह से सीखा जा सकता है। दादी के पास जब भी कोई ऐसा परिवार मिलने आता, उनमें से चाहे कोई उनका रिश्तेदार ही क्यों न हो, उन सभी को उनसे परमात्मा की झलक और बहुत हल्केपन की फीलिंग आती है। प्यार और सहानुभूति की जैसे वे प्रतिमूर्ति हैं।

दादी ने जो सीखा वो परमात्मा से

दादी जानकी संस्था के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के बारे में कहतीं कि मैंने ब्रह्माबाबा से शक्तिशाली, व्यवहारिक, आध्यात्मिक जागृति का पाठ पढ़ा। उन्होंने सिखाया कि कैसे परमात्मा से जुड़कर दूसरों को भरपूर किया जा सकता है। निःस्वार्थ और दिल से सेवा करना लोगों को शक्तिशाली बनाने के लिए अति आवश्यक है। सम्पूर्ण स्नेह से लोग हमारे विचार, हमारे शब्द और हमारे कर्म को समझ पाते हैं। दादी का कहना है कि उन्होंने ब्रह्माबाबा से दूरांदेशी (फॉर साइटेडनेस) बनकर धर्म, पंथ, समाज से ऊपर उठकर खुशी और हर तरह के स्वास्थ्य को लोगों को देना सीखा।

दादी खुद प्रयोगशाला

दादी का अपना जीवन खुद ही प्रयोगशाला है, जिसको उन्होंने अपने मन-मस्तिष्क में बना रखा है और अपने आध्यात्मिक तकनीक से वे अपनी बीमारियों पर विजय प्राप्त कर लेती हैं। उनका कहना है कि परमात्मा की पहचान और समझ के आधार से सकारात्मक कर्म होते हैं और व्यक्ति अच्छे जीवन की तरफ बढ़ता है और समाज को सुदृढ़ बनाने में सकारात्मक योगदान भी देता है।

6 दशक की उपलब्धि

विगत 60 वर्षों में दादी जानकी जी ने स्व की समझ और आध्यात्मिकता के आधार से सद्भावपूर्ण जीवन जीया है। पिछले 6 दशकों में दादी जी ने लगभग 80 से भी अधिक देशों को

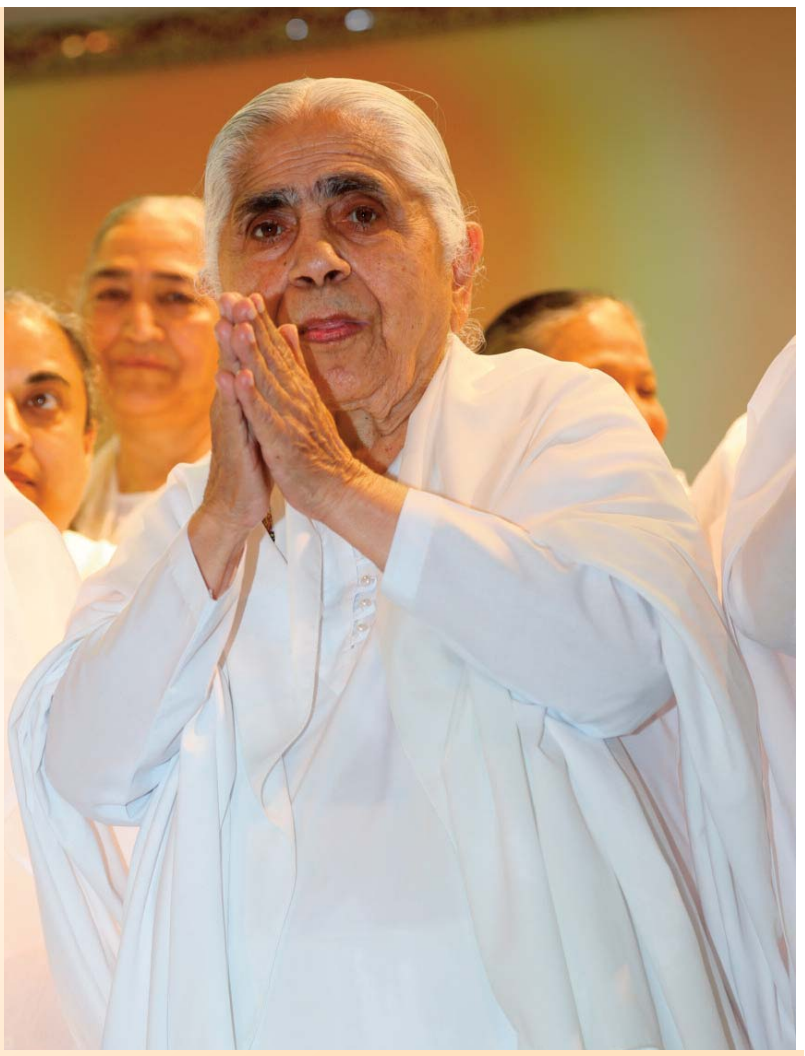

अपने आध्यात्मिक प्रज्ञा से जनमानस को प्रेरणा दी है। आध्यात्मिक और धार्मिक नेताओं से भरा हुआ, सन 1996 में यूनाइटेड नेशन कॉन्फ्रेन्स जो इस्ताम्बुल में हुई थी, जिसमें विश्व भर के प्रख्यात आध्यात्मिक और धार्मिक नेतायें आये थे, उसमें दादी जी ने प्रथम में सम्बोधन भाषण दिया था। इसी श्रृंखला में सेन फ्रान्सिसको में 1996 में स्टेट ऑफ वर्ल्ड कॉन्फ्रेन्स में भी दादी जी ने हिस्सा लिया था, इस कॉन्फ्रेन्स में वहां के तत्कालिन राष्ट्रपति तथा लगभग 600 से भी अधिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

मुलाकात के दौरान दादी जानकी के साथ प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी।

श्री श्री रविशंकर जी के साथ स्नेह मिलन करते हुए दादी जानकी।

अरब देश के सम्मानित प्रतिनिधियों के मध्य दादी जानकी।